सर्वविधकल्याणप्रद रोटबलि विधान

श्रीराजराजेश्वरानन्दनाथ जी

https://tantragurukul.org/

सर्वविधकल्याणप्रद रोटबलि विधान

विषय: सर्वविधकल्याणप्रद रोटबलि विधान एक विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन

दिनांक: 16 सितम्बर 2025

प्रस्तुतकर्ता: श्रीराजराजेश्वरानन्दनाथजी

बलि का तात्विक अर्थ एवं रोटबलि का माहात्म्य

हिन्दू धर्म की उपासना पद्धतियों में **'बलि'** एक अत्यंत गहन एवं तात्त्विक अवधारणा है। सामान्य भाषा में इसे 'त्याग' या 'बलिदान' समझा जाता है, परंतु इसका वास्तविक अर्थ कहीं अधिक व्यापक है। 'बलि' शब्द का तात्पर्य केवल किसी वस्तु के त्याग से नहीं, अपितु यह **समर्पण, कृतज्ञता ज्ञापन एवं सृष्टि के चक्रीय विधान में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने का एक पवित्र अनुष्ठान है**।

पंचमहायज्ञों की वैदिक अवधारणा में भी **भूतबलि** का विधान है, जहाँ गृहस्थ अपने भोजन का अंश देवताओं, पितरों, मनुष्यों के साथ-साथ अन्य प्राणियों एवं प्रकृति की शक्तियों के लिए भी निकालता है, जो 'बलि' के सार्वभौमिक एवं कल्याणकारी स्वरूप को दर्शाता है।

इसी श्रेष्ठ परंपरा में **'रोटबलि विधान'** एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह मूलतः एक सात्विक **'अन्नबलि'** है, जहाँ अन्न से निर्मित विशेष नैवेद्य (रोट) को देवताओं को अर्पित किया जाता है। यह विधान तामसिक बलि प्रथाओं से सर्वथा भिन्न है, जहाँ घी, दूध एवं अन्न से बने पदार्थों की आहुति दी जाती है। गुड़ और घी जैसे पवित्र एवं ऊर्जावान पदार्थों से निर्मित 'रोट' इस सात्विक अर्पण के लिए एक आदर्श माध्यम बन जाता है।यह साधना **रोग-निवारण, अरिष्ट शांति** (ग्रहों एवं अन्य नकारात्मक प्रभावों की शांति), **शत्रु बाधा-निवारण** तथा **पारिवारिक कल्याण** जैसे उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती है। इसका अनुष्ठान साधक को एक आध्यात्मिक सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

यह विधान वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक परंपराओं का एक अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। जहाँ अन्न का नैवेद्य एक पौराणिक एवं वैदिक अवधारणा है, वहीं भैरव एवं क्षेत्रपाल जैसे उग्र स्वरूप वाले रक्षक देवताओं का आवाहन, चौराहे जैसे विशिष्ट स्थान का चयन तथा अनुष्ठान के विशेष नियम तांत्रिक एवं लोकाचार की परंपराओं से प्रेरित हैं।

यह शाक्त एवं तांत्रिक परंपराओं की उस मान्यता के अनुसार है जहाँ उग्र देवताओं को उनकी सुरक्षात्मक शक्तियों को जागृत करने के लिए एक शक्तिशाली ऊर्जा-नैवेद्य की आवश्यकता होती है। तांत्रिक परंपराओं में पशुबलि का विधान रहा है, जो सामान्य गृहस्थ के लिए हर समय संभव नहीं है। इस विरोधाभास का समाधान रोटबलि के रूप में प्रस्तुत होता है।

घी और गुड़ से बना यह घना, ऊर्जा-संपन्न 'रोट' प्राण-ऊर्जा के नैवेद्य का एक शक्तिशाली सात्विक विकल्प बन जाता है। इस प्रकार, यह अनुष्ठान केवल एक साधारण पूजा नहीं, बल्कि एक परिष्कृत आध्यात्मिक तकनीक है जो साधक को दो भिन्न आध्यात्मिक धाराओं का लाभ एक साथ प्राप्त करने की अनुमति देता है।

रोट निर्माण की प्रामाणिक विधि एवं सामग्री

रोट का निर्माण स्वयं में एक साधना है। इसे बनाते समय साधक का मन पूर्णतः शुद्ध, श्रद्धापूर्ण एवं भक्तिभाव से ओतप्रोत होना चाहिए। यह केवल एक खाद्य पदार्थ नहीं, अपितु देव-ऊर्जा को धारण करने वाला एक पवित्र माध्यम है। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार, इस कार्य को पुरुषों द्वारा किया जाना उत्तम माना गया है, जिसका संबंध कुछ विशेष साधनाओं में निर्धारित शौच एवं शुचिता के नियमों से है।

मुख्य सामग्री

- **आटा:** रोट के लिए मुख्य रूप से गेहूं के आटे का प्रयोग होता है। कुछ विशिष्ट परंपराओं, जैसे उत्तराखंड में नागराजा पूजा या हनुमान जी के भोग के लिए, चने के आटे का भी विधान है। आटा पृथ्वी तत्व का प्रतीक है, जो जीवन का आधार और पोषण का स्रोत है।
- **गुड़/शक्कर:** पारंपरिक रूप से गुड़ को उसकी सात्विक प्रकृति और शुद्धता के कारण प्राथमिकता दी जाती है। यह मिठास, मंगल एवं शुभता का प्रतीक है। इसकी ऊर्जा नैवेद्य को शक्तिशाली बनाती है।
- **घृत:** इस विधान में देशी गाय का घी (गोघृत) अनिवार्य है। घी को दूध का सार और देवताओं के लिए सबसे पवित्र हविष्य माना जाता है। यह रूपांतरण और पोषण का कारक है। घी के बिना चढ़ाया गया प्रसाद अपूर्ण माना जाता है और ऐसी मान्यता है कि वह निम्न स्तरीय छुद्र शक्तियों को प्राप्त हो सकता है।

विस्तृत निर्माण विधि

1. **आटा गूंथना:** सर्वप्रथम आटे में पिघला हुआ घी पर्याप्त मात्रा में मिलाया जाता है, जिसे 'मोयन' देना कहते हैं। यह रोट को खस्ता और मुलायम बनाने के लिए आवश्यक है। इसके बाद गुड़ को या तो चूर्ण बनाकर सीधे आटे में मिला दिया जाता है, या फिर थोड़े गुनगुने पानी अथवा दूध में घोलकर उसकी चाशनी बना ली जाती है और उसी से आटा गूंथा जाता है।

2. **आटे की प्रकृति:** रोट का आटा सामान्य रोटी के आटे की तरह मुलायम नहीं, बल्कि सख्त और कड़ा गूंथा जाना चाहिए। इसे बहुत अधिक मसलने की आवश्यकता नहीं होती, बस इतना गूंथना है कि सभी सामग्री एक साथ बंध जाए।

3. **आकार देना:** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, 'रोट' सामान्य रोटी या परांठे से कहीं अधिक बड़ा और मोटा होता है। इसे प्रायः बेलन से बेलने के बजाय हाथों से ही दबाकर या थपथपा कर एक समान आकार दिया जाता है।

4. **पकाने की विधि:** रोट को तवे या पैन पर अत्यंत धीमी आंच पर पकाया जाता है। इसकी मोटाई के कारण इसे अंदर तक अच्छी तरह पकने के लिए धीमी आंच और धैर्य की आवश्यकता होती है, अन्यथा यह बाहर से जल जाएगा और अंदर से कच्चा रह जाएगा। सेंकते समय दोनों ओर प्रचुर मात्रा में घी लगाया जाता है जब तक कि यह सुनहरा-भूरा और खस्ता न हो जाए।

विविधताएं एवं अतिरिक्त सामग्री

नैवेद्य को और अधिक सात्विक एवं सुगंधित बनाने के लिए इसमें **इलायची का चूर्ण, कटे हुए बादाम, नारियल का बुरादा और सूजी** जैसी वस्तुएं भी मिलाई जा सकती हैं। ये पदार्थ रोट की सात्विक गुणवत्ता को और बढ़ाते हैं।

रोटबलि विधान की विस्तृत पूजन प्रक्रिया

यह इस अनुष्ठान की आत्मा है, जिसमें चरण-दर-चरण पूजन विधि का वर्णन किया गया है।

पूजापूर्व तैयारी

- **शुद्धि:** साधक को स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। पूजा स्थल को साफ करके गंगाजल से पवित्र करना आवश्यक है।
- **आसन एवं दिशा:** साधक को एक स्वच्छ आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए।
- **सामग्री:** पूजा की सभी वस्तुएं पहले से एकत्रित कर लेनी चाहिए। तैयार किया हुआ रोट, पीतल या तांबे की थाली, कलश में स्वच्छ जल, पुष्प, धूप, घी का दीपक, कुमकुम/सिंदूर, अक्षत (साबुत चावल) तथा प्रत्येक देवता के लिए वर्णित विशिष्ट सामग्री।

आवाहन एवं प्रारंभिक पूजन

प्रत्येक शुभ कार्य की तरह, यह विधान भी श्री गणेश के आवाहन से प्रारंभ होता है।

- **गणेश पूजा:** सर्वप्रथम भगवान गणेश का ध्यान कर बाधाओं को दूर करने की प्रार्थना की जाती है। एक पूरा रोट भगवान गणेश के लिए काटा जाता है। हाथ में जल लेकर अपने नामगोत्र का उच्चारण कर संकल्प लेना चाहिए कि मैं सभी विघ्नों के हरण के लिए एवं अपनी मनोकामनापूर्ती के लिए भगवान गणेश को ये रोटबलि दे रहा हूं। यह संकल्प लेकर रोट पर कुंकुम अक्षत आदि लगाकर उसे धारदार हथियार से चार भागों में काटना चाहिए और भावाना करनी चाहिए जैसे जैसे ये रोट कट रहा है गणपति जी मेरी सारी समस्याओं को, मेरे सारे रोगों को, विघ्नों को काट रहे हैं। इस प्रकार चार भाग कर एक भाग गणपति जी के आगे रख शेष अलग थाली में रख देने चाहिए। मंत्र है **ॐ गणपतये नमः** मंत्र के साथ अर्पित किया जाता है।

- **कुलदेवता/कुलदेवी पूजा:** गणपति के पश्चात अपने कुल की परंपरा के रक्षक, कुलदेवता या कुलदेवी का स्मरण करना अनिवार्य है। एक रोट अपने कुलदेवीदेवता के निमित्त देना चाहिए और उनसे इस कार्य को निर्विघ्न संपन्न करने की आज्ञा और आशीर्वाद मांगा जाना चाहिए। प्रक्रिया गणेशवत् ही है। इसके लिए **ॐ कुलदेवताभ्यो नमः** या अपने कुल देवता के विशिष्ट मंत्र का प्रयोग करें।

- **शिव पूजा:** इसके उपरांत, देवों के देव महादेव, जो समस्त भूत-प्रेतों के स्वामी हैं। उन्हें रोटबलि देनी चाहिए। विधान गणेशवत् ही है पूजनमंत्र **ॐ नमः शिवाय** है।

- **चण्डिका पूजा:** इसके पश्चात चण्डिका को रोट दिया जाना चाहिए। यदि पंचदेवताओं की उपासना करते हैं तो सूर्य एवं विष्णु जी को भी रोट देना चाहिए। रोट का विधान पूर्ववत् ही है। मंत्र **ॐ नमश्चण्डिकायै** रहेगा। चण्डिका के रोट में एक लौंग का जोडा भी रखें।

- **हनुमान जी एवं बटुकभैरव पूजा:** इसके पश्चात हनुमान जी को एवं बटुकभैरव को रोट चढायें। दोनों चण्डिका के आगे पीछे चलते हैं।

    - **हनुमान जी हेतु:** हनुमान जी के लिए जब रोट बनाना हो तो रोट चने का होना चाहिए एवं आटागुड़ सूखे मेवे, इलायची तवे पर घी लगाकर सेंकना है। **हनुमते नमः** कहकर रोट चढाना है।

    - **बटुक भैरव हेतु:** बटुक भैरव को रोट के साथ साथ ही सदीपदधिमाष बलि भी चढायें। इसका वर्णन अन्य लेख में किया जायेगा।भैरव का आवाहन संकटों और भयों से रक्षा करने वाले देवता के रूप में किया जाता है।

- **क्षेत्रपाल हेतु:** क्षेत्रपाल हेतु भी रोटबलि होती है तथापि अष्टबलि के अन्तर्गत उसके विधान का वर्णन करेंगे। जहां नवरात्र आदि में अन्य रोट नित्य जाते हैं क्षेत्रपाल हेतु अन्तिम दिन ही बलिविधान किया जाता है। क्षेत्रपाल स्थान एवं दिशाओं के रक्षक देवता हैं। साधक क्षेत्रपाल का आवाहन कर उनसे घर, परिवार की सभी दिशाओं से तथा

भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी जैसी नकारात्मक शक्तियों से रक्षा करने की प्रार्थना करता है। इनकी बली चौराहे, दक्षिण दिशा अथवा किसी सुनसान स्थान पर रखी जाती है।

रोटबलि के पश्चात देवताओं के समक्ष रखे रोट के टुकडे को चौराहे पर डाले दें अथवा गौ को खिला दें। शेष तीन—तीन टुकडे प्रसाद रूप में वितरण योग्य होते हैं।

ध्यान रहे स्टील, लोहे, एल्यूमीनियम या प्लास्टिक के बर्तनों में भोग लगाना शुभ नहीं माना जाता है।

व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ: रोट की पवित्रता

यह समझना महत्वपूर्ण है कि 'रोट' केवल इस अनुष्ठान का एक नैवेद्य मात्र नहीं है, बल्कि भारत के कई क्षेत्रों में यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीक है।

- **उत्तराखंड** के गढ़वाल क्षेत्र में, 100 वर्षों से भी अधिक पुरानी '**नागराजा रोट परंपरा**' में लगभग 40 किलो का एक विशाल रोट नागराजा देवता को अर्पित किया जाता है। यह एक सामूहिक अनुष्ठान है जो सामाजिक एकता और गहरी आस्था का प्रतीक है।
- **गढ़वाली परंपरा** में, 'रोट' और 'अरसा' विवाहित बेटियों और मेहमानों को दिए जाने वाले 'कलेऊ' (मिठाई का उपहार) का एक अभिन्न अंग हैं। यह स्नेह और मंगलकामना का प्रतीक है और लंबे समय तक खराब न होने के कारण यात्रा के लिए भी उपयुक्त होता है।
- **बिहार** के कुछ क्षेत्रों में भी कुलदेवता की पूजा के लिए सैकड़ों मिट्टी के चूल्हों पर एक साथ रोट बनाने की परंपरा है, जो विशाल सामुदायिक सहभागिता और अटूट श्रद्धा को दर्शाती है।

यह सांस्कृतिक संदर्भ 'रोट' को केवल एक खाद्य सामग्री के स्तर से उठाकर एक पूजनीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करता है, जो पीढ़ियों की आस्था से सिंचित है।

निष्कर्ष: रोटबलि विधान का समसामयिक महत्व एवं फलश्रुति

रोटबलि विधान स्वयं में ही एक पूर्ण अनुष्ठान है। यह अपने भयों, चिंताओं और नकारात्मकताओं को शक्तिशाली दैवीय संरक्षकों के चरणों में समर्पित करने का एक मूर्त कार्य है। यह बलि की तांत्रिक अवधारणा को पुष्ट करता है, जो इसे एक ऊर्जावान आदान-प्रदान के रूप में देखता है। पवित्र अन्न (जो पार्थिव जीवन-ऊर्जा का स्रोत है) को अर्पित करके, साधक

देवताओं के सुरक्षात्मक पहलुओं को पोषित और सक्रिय करता है। बदले में, देवता अपनी कृपा प्रदान करते हैं, बाधाओं को दूर करते हैं और भक्त की रक्षा करते हैं।

तनाव, अनिश्चितता और अदृश्य चुनौतियों से भरी आधुनिक दुनिया में, यह अनुष्ठान आध्यात्मिक सुरक्षा का एक कवच बनाने का एक ठोस तरीका प्रदान करता है। यह व्यक्ति को देवताओं के साथ जुड़कर, अपनी आस्था को मजबूत करके और ब्रह्मांडीय व्यवस्था एवं सुरक्षा की भावना स्थापित करके अपने कल्याण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि जब पूर्ण श्रद्धा, भक्ति और सही विधि के पालन के साथ रोटबलि विधान को संपन्न किया जाता है, तो यह निश्चित रूप से साधक और उसके परिवार को स्वास्थ्य, शांति, सुरक्षा और समृद्धि के अपने वांछित फलों को प्रदान करता है।

रोटबलि विधान: एक विस्तृत FAQ

1. 'बलि' शब्द का तात्विक अर्थ क्या है और 'रोटबलि' इसमें कैसे भिन्न है?

हिन्दू धर्म में 'बलि' का अर्थ केवल त्याग या बलिदान नहीं, बल्कि समर्पण, कृतज्ञता ज्ञापन और सृष्टि के चक्रीय विधान में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने का एक पवित्र अनुष्ठान है। 'रोटबलि विधान' इसी श्रेष्ठ परंपरा का एक विशिष्ट 'अन्नबलि' है। यह घी, दूध और अन्न से बने विशेष नैवेद्य (रोट) को देवताओं को अर्पित करने की एक सात्विक प्रथा है, जो तामसिक पशुबलि प्रथाओं से पूरी तरह भिन्न है।

2. रोटबलि विधान किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है?

रोटबलि विधान रोग-निवारण, अरिष्ट शांति (ग्रहों और नकारात्मक प्रभावों की शांति), शत्रु बाधा-निवारण और पारिवारिक कल्याण जैसे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अत्यंत प्रभावी माना जाता है। यह साधक को एक आध्यात्मिक सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

3. रोट बनाने की प्रामाणिक विधि और आवश्यक सामग्री क्या हैं?

रोट का निर्माण गेहूं के आटे (या चने के आटे), गुड़ और अनिवार्य रूप से देशी गाय के घी से होता है। आटे में घी (मोयन) मिलाकर, गुड़ की चाशनी से सख्त आटा गूंथा जाता है। फिर इसे हाथ से मोटा आकार देकर धीमी आंच पर दोनों तरफ घी लगाकर खस्ता होने तक सेंका जाता है।

4. रोटबलि विधान की पूजन प्रक्रिया में किन प्रमुख देवताओं को रोट अर्पित किया जाता है?

पूजन प्रक्रिया में श्री गणेश, कुलदेवता/कुलदेवी, भगवान शिव, चण्डिका, हनुमान जी, बटुक भैरव, और क्षेत्रपाल को रोट अर्पित किया जाता है। प्रत्येक देवता की भूमिका विघ्न हरने, कुल की रक्षा करने, नकारात्मक शक्तियों से बचाने और दिशाओं की सुरक्षा करने की होती है।

5. रोटबलि के उपरांत अर्पित किए गए रोट का क्या किया जाता है?

देवताओं के समक्ष रखे गए रोट के टुकड़ों को चौराहे पर डाल दिया जाता है अथवा गाय को खिला दिया जाता है। शेष रोट को प्रसाद के रूप में वितरित किया जा सकता है।

6. रोट का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व क्या है?

'रोट' केवल एक नैवेद्य नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रतीक है। उत्तराखंड की 'नागराजा रोट परंपरा' और गढ़वाली 'कलेऊ' परंपरा से लेकर बिहार की सामुदायिक पूजा तक, यह सामाजिक एकता, स्नेह और गहरी आस्था को दर्शाता है।

7. रोटबलि विधान का समसामयिक महत्व क्या है?

आधुनिक दुनिया के तनाव और अनिश्चितताओं के बीच, यह विधान आध्यात्मिक सुरक्षा का एक कवच बनाने का ठोस तरीका प्रदान करता है। यह देवताओं से जुड़कर अपनी आस्था को मजबूत करने और ब्रह्मांडीय सुरक्षा की भावना स्थापित करने का एक माध्यम है।

8. पूजा के लिए तैयारी और प्रारंभिक चरण कैसे होते हैं?

पूजा से पूर्व साधक को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए और पूजा स्थल को पवित्र करना चाहिए। पूर्व या उत्तर दिशा में मुख करके आसन पर बैठना चाहिए। पूजा की सभी सामग्री (रोट, थाली, जल, पुष्प, दीपक आदि) पहले से एकत्रित कर लेनी चाहिए। पूजा का आरंभ गणेश जी के आवाहन और अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु संकल्प लेने से होता है।

Tantragurukul